IJAER/ March-April 2023/Volume-12/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

धर्मवीर भारती के उपन्यासों का शिल्प विधान विवेचनात्मक अध्ययन

Jyoti Dubey

Research Scholar Kalinga University

Dr. Vinod Kumar Yadav,

Department of Hindi,Kalinga University

सार

किसी भी साहित्यकार की निरूपण – शक्ति की कोख में से जितने भी पात्र जन्म लेते हैं, उन सब में साहित्यकार स्वयं विद्यमान होता है। जैसे कोई व्यक्ति स्वयं को आईने में देखता है, उसी प्रकार से साहित्यकार का प्रतिबिंब उसकी रचनाओं में दिखाई देता है। इस विषय में स्वयं भारती जी ने श्ठंडा लोहाश कविता संग्रह की भूमिका में लिखा है – मेरी परिस्थितियाँ, मेरे जीवन में आने और आकर चले जाने वाले लोग, मेरा समाज, मेरा वर्ग, मेरे संघर्ष, मेरी प्रवृत्तियाँ इन सभी का मेरे और मेरी कविता के रूप गठन और विकास में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भाग रहा है। आकर्षक रूप से जटिल और विशाल भारतीय महाकाव्य, महाभारत से लेकर कथासरित्सागर की लोककथाओं तक, भारतीय कहानी कहने की परंपराओं ने लंबे समय से कथाओं के भीतर कहानियों के साथ प्रयोग किया है।जैसा कि मौखिक कहानी कहने की प्रथा है, इन कहानियों को एक ही दृष्टिकोण से नहीं बताया गया था, बल्कि इसमें कालक्रम के समकालीन विचारों के लिए बहुत कम सम्मान के साथ अलग–अलग कहानियों के कई स्तर शामिल थे। इन कहानियों में मनुष्यों के बारे में देवताओं की कहानियाँ, तोतों के बारे में मनुष्यों की कहानियाँ और देवताओं के बारे में तोते की कहानियाँ शामिल थीं। यह शोध महाभारत की दो उत्तर–आधुनिक व्याख्याओं पर गौर करता हैरू पीटर ब्रुक की 1989 की फिल्म द महाभारत और धर्मवीर भारती की 1954 का हिंदी नाटक अंधा युग, जिसका अंग्रेजी में अनुवाद आलोक भल्ला ने किया था। इसके अलावा, और शायद एक डिजाइनर के लिए सबसे दिलचस्प बात, यह तुरंत ध्यान दिया जाना चाहिए कि फ्रेम फिल्म निर्माण का एक अनिवार्य घटक हैं, और इस शोध की संरचना एम्बेडेड फ्रेम विरासत से ली गई है।

खोजशब्द रू साहित्यकार , महाभारत , महाकाव्य, कहानियाँ

परिचय

किसी भी लेखक के समग्र साहित्य का मूल्यांकन करने के लिए उसके व्यक्तित्व, उस व्यक्तित्व के सामाजिक संदर्भ, उसके अपने परिवेश – परिस्थिति से संबंध आदि का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। क्योंकि जिन संस्कारों, परिवेश–परिस्थितियों में वह पला–बढ़ा, जिस क्षण विशेष से वह प्रभावित हुआय उसका प्रभाव उसके साहित्य पर भी पड़ता है। साथ ही प्रत्येक रचनाकार

Copyright@ijaer.org

की अपनी कुछ मान्यताएँ–अभिरूचियाँ एवं जीवन– दृष्टि होती हैं, जिन्हें वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने कृतित्त्व में अभिव्यक्त करता है।

डॉ. धर्मवीर भारती आधुनिक हिन्दी साहित्य के ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने अपनी श्अभिव्यक्ति का माध्यमश साहित्य की लगभग सभी विधाओं को बनाया । मुख्य रूप से उन्होंने कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध, यात्रा – साहित्य, रिपोर्ताज, आदि लिखा है। इसके साथ ही वे एक पत्रकार और अनुवादक के रूप में भी जाने जाते हैं। चिन्तन और संवेदनशीलता के साथ कल्पना – प्रभावी समावेश भारती साहित्य का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। एक रचनाकार के रूप में भारती के कृतित्त्व के विवेचन – विश्लेषण से पूर्व उनके जीवनगत – व्यक्तिगत परिवेश – परिस्थितियों को भी समझना, उनके साहित्य के मूल्यांकन के लिए उचित होगा। जिस परिस्थिति–व्यक्ति विशेष ने उनके व्यक्तित्त्व को प्रभावित किया और जिस श क्षण विशेष ने उनकी रचनात्मकता को नये मोड़ पर लाकर खड़ा कर दियाय भारती के जीवन एवं रचनाओं के संबंध में इन सबका क्या महत्त्व ह, इसका उनके साहित्य पर क्या प्रभाव दिखाई पड़ता है, इसको समझना भी आवश्यक है।

जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि

भारती का जन्म इलाहाबाद में, 25 दिसम्बर 1926 को अतरसुइया मुहल्ले के मकान में हुआ। डॉ. सोनवणे और डॉ. पुष्पा वास्करश ने अपनी पुस्तकों में भारती का जन्म–दिवस 24 दिसम्बर सन् 1926 लिखा है, जो कि गलत है क्योंकि भारती के घनिष्ठ मित्रों और स्वयं भारती ने अपने पत्र में अपना जन्म–दिन 25 दिसम्बर सन् 1926 ही लिखा है। इनकी माँ का नाम श्रीमती चंदा देवी और पिता का नाम श्री चिरंजीव लाल वर्मा था। भारती का वंश मूलतरू शाहजहाँपुर जिले के खुदांगज कस्बे का निवासी था। उनके बाबा एवज राय एक धनी दबंग जमींदार थे। जहाँ बहुत बचपन मं, छुट्टियों में वे माता–पिता के साथ जाया करते थे। भारती की स्मृति में वहाँ की अनेक यादें सजीव थीं जिनका जिक्र करते हुए वे लिखते हैं ष आँगन के पास एक बड़ा कमरा था जिसमें बंदूके, तलवारें, बरछियाँ बघनखे भी ताखे में रखे रहते थे। मेरे आकर्षण के दो ही केन्द्र होते थे – कोठी के पिछवाड़े के विशाल आँगन में लगी मेंहदी, आम, इमली, बेला, गुलतस्वी के झाड़ और तरह – तरह की फूलवाली लतरें, उनमें उड़ते तोते और आँगन में खेलते गाय के बछड़े। फूलों, रंगों और खुशबुओं से प्यार इसी आँगन से पनपा । और दूसरा केन्द्र था वह कमरा तलवारों और बरछियों वाला, जहाँ अक्सर बैठकर नौकरों से डकैतों और परियों की कहानियाँ सुनता, श्बालसखाश या बच्चों की आयी पत्रिकाएँ पढ़ता। ष भारती साहित्य में उनका फूलों– रंगों से प्यार और उस का वर्णन, उनका प्रकृति – प्रेम एक महत्त्वपूर्ण अंग है। जिसके बारे में विद्यानिवास मिश्र लिखते हैं कि ष भारती शायद पहले कवि हैं जिन्होंने पेन्सी, नरगिस, स्वीट पीज, नैस्टेर्शियम जैसे जाड़े के मौसमी फूलों की चर्चा की।ष खुदागंज में पड़ोस के पंडित चाचा भारती के पिता के मित्र थे । उनकी विशेषता यह थी कि व प्रातरूकाल स्नान के समय कोई स्त्रोत या श्लोक आदि न पढ़कर सस्वर श्गीत गोविन्दश का पाठ करते थे। पिता अक्सर उनसे श्गीत गोविन्दश सुनते परन्तु माँ उनकी इस आदत पर कहती ष कविता समझने की इसकी उम्र तो नहीं है । पर श्गीत गोविन्दश जैसी श्भ्रष्टश कविता इस पर क्या असर डालेगी

उद्देश्य

1. प्रस्तुत खंड की पहली इकाई में हिन्दी साहित्य के इतिहास का अध्ययन किया जाएगा।
2. इसके अतिरिक्त हिन्दी साहित्य का काल विभाजन नामकरण पर विस्तृत चर्चा इस अध्याय में की गयी है।

डॉ. भारती पर विभिन्न जीवन मूल्यों का प्रभाव

भारती के जीवन की परिस्थितियों ने उन पर विशेष प्रभाव डाला। बचपन से लेकर उनके पिता की मृत्यु तक की अवस्था को यदि देखें तो उनका परिवार उच्च मध्यवर्ग से निम्न मध्यवर्ग के आर्थिक स्तर तक पहुँच चुका था। विभिन्न कठिनाइयों से भरा, संघर्षपूर्ण जीवन आगे पड़ा थाय जिसे भारती ने चुनौती के रूप में स्वीकार किया। इसे हम भारती पर उनके पिता का प्रभाव, शिक्षा और संस्कार कह सकते हैं, जिसे भारती अपना श्नायक 24 कहते हैं। भारती के माता–पिता दोनों आर्य समाजी थे। परन्तु माँ कट्टर आर्य समाजी थी तो पिता समझदार आर्य–समाजी । पिता ने आरंभ से ही भारती को जिस प्रकार की शिक्षा दी उससे निश्चय ही उन्हें कठिनाइयों से भरे जीवन को जीने में सहायता मिली होगी। भारती के पिता ने आरंभ से ही उन्हें हर प्रकार की पुस्तकें लाकर पढने को दिया जिससे श्अध्ययनश की आदत और लगन उनमें पनपी । भारती के पिता ने गाँधी जी के आह्वान पर सरकारी नौकरी से इस्तीफा देकर उनमें राष्ट्रीयता का बीज बोया। उन्होंने अपने नाम के पीछे से श्वर्माश हटाकर श्भारतीयश लगा लिया था जो आगे चलकर श्भारतीश हो गया। इस हम उन पर आर्य समाज के प्रभाव और पिता की शिक्षा के रूप में भी देख सकते हैं। भारती ने अपने विभिन्न

साक्षात्कारों में जितना अपने पिता का जिक्र किया है उतनी अपनी माँ का नहीं । भारती के दस भाई–बहन पैदा होकर ही मर गए, अतः माँ उनको अनुशासन के कठोर नियमां और अति सुरक्षा और देखभाल से रखती थीं। संध्या हवन, जनेऊ, ब्रह्मचर्य सभी विधिवत् चलता रहता था। परन्तु उनके पिता उतने कट्टर नहीं थे। पद्मा सचदेव ने अपने लेख श्जीवे मेरा भाईश में भारती के पिता के संबंध में अनेक छोटी–छोटी घटनाओं का जिक्र किया है। जिसमें एक घटना उनके यज्ञोपवीत के समय की है, जब सारे रिश्तेदारों के होते हुए भी भारती के पिता ने पहली भिक्षा अपने मुस्लिम मित्र से डलवायी । जबकि उनकी माता की इच्छा थी कि पहली भीख उनका देवर डाले । आर्य समाजी पंडित भी विरोध कर रहे थे परन्तु भारती के पिता का कहना था कि ष्मेरे भाइयों ने बेशक मेरे साथ दगा की हो, पर मित्रों ने कभी नहीं की, इसलिए पहली भीख यही डालेंगे। अन्यत्र एक घटना में वे भारती से कहते हैं कि ष कोई बड़ा हाथ उठाये तो मना करना, अगर बराबरी वाला मारे तो जवाब में मारना, चाहे हड्डी टूट जाये। कमजोर को कभी न मारना। पर कोई मारे तो जवाब दिये बिना न आना। भारती के पिता की अनेक ऐसी बातें हैं जिनका प्रभाव भारती के व्यक्तित्त्व पर आजीवन रहा । भारती ने लिखा है – ष पिताजी का हृदय विशाल होने से मेरा झुकाव उन्हीं की ओर अधिक था। उनके गुजर जाने के बाद उन्हीं का आदर्श मेरी आँखों के सामने था।

1927 माँ के संबंध में भारती लिखते हैं– "मैं माँ का अत्यन्त लाडला और इकलौता बेटा था। मेरा आचार, व्यवहार, सोच कुछ भी तो उसे पसन्द नहीं था।

बौद्धिक स्तर पर वे आर्यसमाजी थीं, तो भावनात्मक स्तर पर रूढिप्रिय । मुझे यह कदापि पसंद नहीं था। किशोरावस्था की दो विपरीत स्थितियाँ मेरे जीवन–मूल्यों का मूलाधार बन गयीं। यकीनन मेरे लेखन पर भी इन जीवन–निष्ठाओं का प्रभाव पड़ा। अन्याय के प्रति घृणा तथा उससे जूझने की प्रखरता और माधुर्य के स्पर्श से प्रसूत स्नेह – स्निग्धता मेरे भावी जीवन का सम्बल बन गये। कुछ पाने, कुछ खोने का यह दौर मेरे सोच और सर्जकता की बुनियाद है। 28 भारती के व्यक्तित्त्व का यह द्वन्द्व उनके साहित्य पर भी दिखाई पड़ता है। जहाँ तक माँ–बेटे के संबंधों का प्रश्न है उसकी झलकय हमें उनकी कहानी श्बंद गली का आखिरी मकानश में थोड़ो–बहुत मिलती है।

शिक्षा एवं आजीविका

भारती की प्रारम्भिक शिक्षा उनके घर पर ही हुई। पहली बार चौथी कक्षा में उन्हें डी.ए.वी. हाई स्कूल इलाहाबाद में डाला गया। पिता की आकस्मिक मृत्यु के बाद उन भयानक दिनों में दूर के रिश्ते के मामा श्री अभय कृष्ण चौधरी ने बहुत सहायता की। कर्ज उतारने और गुजर–बसर करने के लिए माँ छोटी बहन को लेकर गुरुकुल में नौकरी करने चली गईं और भारती अपने मामा के पास रहे। भारती के अनुसार मामी ने माँ से बढ़कर स्नेह दिया और मामा ने संरक्षण । अमिट ममता के साथ ही वे खूब पढ़ने–लिखने और कुछ बड़ा काम करन की प्रेरणा भी देते रहे। एक ओर वजीफो के सहारे भारती पढ़ते थे, वही दूसरी ओर सन् 1942 में इण्टरमीडिएट की परीक्षा पास करने के बाद, उन्होंने 1942 के श्भारत छोड़ो आन्दोलनश में भी भाग लिया। जिस कारण एक वर्ष की पढाई भी छूट गयी थी। वे सुभाष चन्द्र बोस के बड़े प्रशंसक थे। उन दिनों को याद करते हुए भारती की बहन वीरबाला लिखतीं हैं " इलाहाबाद भैया के हृदय की धड़कन था सन् 1942 के स्वाधीनता आन्दोलन में भइया ने बड़े उत्साह से भाग लिया। जलूसों में वे झंडा लेकर सबसे आगे चलते थे। उस समय धर्मवीर भारतीयश होते थे। बाद मं साहित्य सम्पर्क में आकर धर्मवीर श्भारतीश हुए। सन् 1945 में भारती ने बी.ए. की परीक्षा पास की और हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करके श्चिन्तामणि घोष स्वर्ण पदकश प्राप्त किया ।

गृहस्थ जीवन

भारती ने दो विवाह किये। सन् 1955 के आसपास एक पंजाबी शरणार्थी लड़की से विवाह हुआ। जिसके संबंध में भारती ने अपने पत्र में लिखा है ष संस्कारों के तीव्र वैषम्य के कारण वह विवाह असफल रहा और बाद में विच्छेद हो गया। इस विवाह विच्छेद से भारती के मित्रों में भी हलचल पैदा हुई, उन्हें उनका वैमनस्य और व्यंग्य–बाण झेला पड़ा किन्तु भारती ने कभी अपने वैयक्तिक जीवन को सार्वजनिक रूप नहीं दिया। इस पत्र के अलावा भारती द्वारा कहीं भी पहले विवाह

की चर्चा नहीं मिलती । उनका दूसरा विवाह पुष्पा शर्मा से हुआ। इस संबध में उनकी बहन वीरबाला श्यादें भइया कीश में लिखती हैं ष उनकी पहली पत्नी का नाम कांता भारती था, जिनकी पुत्री पारमिता भारती हैं। उनकी दूसरी पत्नी का नाम पुष्पा भारती है, जिनका पुत्र किंशुक भारती और पुत्री प्रज्ञा भारती है। पुत्र किंशुक सपत्नी अमरीका में बस गए हैं और दोनों पुत्रियाँ भारत में ही हैं। 20 पुष्पा शर्मा से अपने सम्बंधों में भारती को बहुत सुख – संतोष मिला जिसके संबंध में उन्होंने लिखा – ष्केवल जीवन में ही नहीं, वरन् विचारों और साहित्य–चिन्तन के क्षेत्र में भी उनका एक सार्थक, गहरा, प्रेरणास्पद साथ मिला।

यात्राएँ

धर्मयुगश के सम्पादक के नाते उन्होंने देश–विदेश का परिभ्रमण किया। सन् 1961 में कामनवेल्थ रिलेशन्स कमेटी के आमन्त्रण पर वे प्रथम – विदेश यात्रा पर इंग्लैंड और यूरोप की यात्रा पर गए। सन् 1964 में पश्चिमी जर्मनी सरकार के निमंत्रण पर जर्मनी – यात्रा का अवसर मिला तथा सन् 1966 में भारतीय दूतावास के निमंत्रण पर इंडोनेशिया तथा थाइलैंड की यात्राएँ कीं । सितम्बर 1971 में मुक्तिवाहिनी के साथ बांग्लादेश की गुप्त यात्रा की तथा भारतीय थलसेना के साथ युद्ध के वास्तविक मोर्चे के रोमांचक अनुभवों को लिपिबद्ध किया, जो कि श्मुक्तक्षेत्रे रू युद्धक्षेत्रश नामक पुस्तक में संकलित है। इसके पहले ऐसा काम कभी किसी भारतीय पत्रकार ने नहीं किया। इसके बाद भारतीय मूल की मॉरिशसीय जनता की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए जून 1974 में मॉरिशस की यात्रा की। फिर ऐफ्रो एशियाई कॉन्फ्रेन्स में भाग लेने के लिए पुनरू मॉरिशस गये ।

प्रारंभिक जीवनरू धर्मवीर भारती का जन्म क्रिसमस के दिन वर्ष 1926 में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद शहर में हुआ था। उनके माता–पिता चिरंजी लाल और चंदा देवी के दो बच्चे थे, धर्मवीर और उनकी बहन वीरबाला। गंभीर वित्तीय संकट से जूझने के बाद उनके पिता की बहुत कम उम में मृत्यु हो गई। व्यक्तिगत क्षति के बावजूद धर्मवीर ने अपनी पढ़ाई में अच्छे परिणाम हासिल करना जारी रखा और वर्ष 1946 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में मास्टर डिग्री पूरी की। कॉलेज में हो हिंदी भाषा में उनकी प्रतिभा को शिक्षकों ने पहचाना और उन्हें पुरस्कृत किया।

आजीविकारू हिंदी में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी करने के बाद धर्मवीर अभ्युदय और संगम पत्रिकाओं में उप संपादक के रूप में शामिल हुए। पांच साल से अधिक समय तक काम करने के बाद, धर्मवीर ने डॉ. धीरेंद्र वर्मा के अधीन सिद्ध साहित्य पर शोध कार्य करने का विकल्प चुनते हुए अपने थीसिस पेपर पर काम करना शुरू किया। वर्ष 1954 में जब उन्होंने अपनी पीएच. डी. की डिग्री हासिल की, तो धर्मवीर भारती ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी में व्याख्याता का पद हासिल किया। जहाँ उन्होंने अपने अल्मा मेटर में छात्रों को शिक्षित करना जारी रखा, वहीं धर्मवीर ने अपने खाली समय का उपयोग अपनी कविताएँ, उपन्यास और नाटक लिखने में भी किया। रिपोर्टों का दावा है कि इसी दौरान धर्मवीर भारती ने अपने विशाल कविताओं और कहानियों के संग्रह का अधिकांश हिस्सा लिखा था।

कथानक

इसे लघु उपन्यास की संज्ञा दी गयी है। कथानक की बुनावट उपन्यास की विषय–वस्तु को नए आयाम प्रदान करती है। सूरज का सातवों घोड़ा भी भारत–ईरान की प्राचीन शैलियों से प्रभा वत माना जाता है लेकिन, पुरानी कस्सागोई का यह तरीका –अलफलैला, पंचतंत्र, दशकुमारचरित अथवा कथासरित्सागर सूरज का सातवाँ घोड़ा की ऊपरी त्वचा मात्र है, इसे कथानक का बुनियादी ढाँचा नहीं माना जा सकता। एक दूसरी शैली भी इसमें परिल क्षत की जा सकती है– वह है, वीरगाथाओं या अन्य महाकाव्यों जैसी शैली, जिसमें रचनाकार अपनी रचनाओं का रचयिता ही नहो वरन् घटनाओं के बीच स्वयं भी उपस्थित है। वह भोक्ता और रचयिता दोनों है। इस प्रकार रचना तटस्थ होने, निजी अनुभूति को सार्वजनिक अनुभव में तब्दील करने का दायित्व बन जाती है। पृथ्वीराज रासो के रचयिता चंदवरदायी इसके महत्त्वपूर्ण चरित्र भी हैं, ठीक उसी तरह जैसे वाल्मी क और तुलसी खुद को अपनी रचनाओं में उपस्थित कर देते हैं या क संजय महाभारत के घटनाचक्र में मौजूद है।

लेखन का संग्रह

कवितारू ठंडा लोहा, ष्सपना अभी भीष्, सात गीत वर्ष और कनुप्रिया सबसे प्रसिद्ध कविताएँ हैं जो धर्मवीर भारती द्वारा लिखी गई हैं।

उपन्यासरू सूरज का सातवां घोड़ा संभवतः इस शैली में धर्मवीर भारती की सबसे प्रसिद्ध कृति थी। इस उपन्यास में लिखे आख्यानों का सेट इतना लोकप्रिय हुआ कि बाद में प्रख्यात कवि मलय रॉय चौधरी ने इसका बंगाली भाषा में अनुवाद किया और उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला। इस उपन्यास को फिल्म निर्माता श्याम बेनेगल ने बड़े पर्दे पर भी रूपांतरित किया, जिसके लिए उन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। गुनाहों का देवता, प्रारंभ व समापन और ग्यारा सपनों का देश धर्मवीर भारती द्वारा लिखे गए लोकप्रिय उपन्यास हैं।

नाटकोंरू अंधा युग हिंदी साहित्य में अब तक लिखे गए सबसे लाकप्रिय नाटकों में से एक था और हमेशा रहेगा। इसे आज भी मंच पर प्रदर्शित किया जाता है। यह नाटक, जिसके संवाद काव्य–शैली में लिखे गए हैं, महाभारत से प्रेरित था। धर्मवीर भारती ने प्रसिद्ध भारतीय महाकाव्य के अंतिम दिन ष्अंधा युगष् की कहानी को आधार बनाया।

डॉ. धर्मवीर भारती का करियर

1954 में उन्होंने अपनी पीएचडी पूरी की और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी के व्याख्याता के रूप में नियुक्त हुए। इससे पहले उन्होंने ष्अभुदयष् और संगम पत्रिकाओं के उप–संपादक के रूप में अपनी पत्रकारिता कौशल की कोशिश की। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता में अपनी पहचान बनाई। 1960 में वह टाइम्स ऑफ इंडिया समूह का प्रस्ताव लेने के लिए मुंबई चले गए। लोकप्रिय हिंदी साप्ताहिक पत्रिका धर्मयुग के मुख्य–संपादक। एक पत्रकार के रूप में उन्होंने भारत–पाक

युद्ध को कवर किया जिसके परिणामस्वरूप बांग्लादेश को मुक्ति मिली। उनके संपादन में यह पत्रिका भारत में बहुत लोकप्रिय हुई। वह 1987 तक इस पत्रिका के संपादक रहे। .

उनकी प्रसिद्ध कविताएँ ष्कनुप्रियाष्, ष्ठंडा लोहाष्, ष्सात गीत वर्षष् और ष्सपना अभी भीष् हैं। लघु उपन्यास ष्सूरज का सातवां घोड़ाश्श को बीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में सबसे महान कायां में से एक माना जाता है। इस पर 1992 में श्याम बेनेगल द्वारा पुरस्कार विजेता फिल्म बनाई गई है। अंधा युग और गुनाहों का देवता उनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं जो हैं पौराणिक कथाओं पर आधारित धर्मवीर भारती को एक कमजोर व्यक्तित्व के रूप में पेश करने वाले इस उपन्यास में रचनात्मक कौशल सिरे से अनुपस्थित ताजा छपे, देवेश ठाकुर के उपन्यास देवता के गुनाह पढ़ जाने के बाद सबसे पहले उलट–पलट कर देखने की जिज्ञासा हुई कि इसमें कहीं इसके श्श्पूरी तरह काल्पनिकश्श होने की घोषणा की गई है या नहीं? फिर इस उपन्यास की एक समीक्षा मं लिखा हुआ पढ़ा कि देवता के गुनाह अनायास धर्मवीर भारती के गुनाहों का देवता का स्मरण करा देता है हालांकि दोनों रोमांटिक उपन्यास हैं, पर भारती के यहां प्रेम प्लेटोनिक है जबकि ठाकुर में नितांत ऐंद्रिक. इस उपन्यास का संबंध गुनाहों का देवता से नहीं, उसके लेखक धर्मवीर भारती से है. देवेश के इस उपन्यास का मुख्य पात्र शोभनाथ देहरादून के एक कॉलेज में हिंदी साहित्य का प्राध्यापक है जो रोमानी कविताएं लिखता है. उसका एक उपन्यास भी छपकर लोकप्रिय हो चुका है. उसे अपनी एक छात्रा के माध्यम से कलकत्ता के एक प्रकाशन समूह ज्ञानदीप की बंबई से निकलने वाली पत्रिका नया युग की संपादकी हासिल हो जाती है.

सृजन और आलोचन

सामान्य रूप से कविता , कहानी , उपन्यास और नाटक को सृजनात्मक साहित्य कहा जाता है। आलोचना को भी कुछ विद्वान सृजनात्मक मानते हैं। स्काट जेम्स का विचार है कि दृ " कवियों का निर्णायक कवि ही है। सर्जक जीवन के सुख – दुख , आशा – निराशा और आकुल्ता – आकांक्षा का संश्लिष्ट चित्रण करके एक प्रतिसंसार की सृष्टि करता है। वह पाठक की संवेदना और उसके जीवन – दर्शन को उन्नत एवं उदात्त बनाता है। आलोचना में भी यही कार्य निहित है। " आलोचना का सिद्वान्त मूल्य और संप्रेषण क्षमता रूपी दो खंभों पर स्थित है। लकिन सर्जक और आलोचक की मौलिक प्रतिभा में अंतर होता है। सर्जक " कारयित्री प्रतिभा " से संपन्न है तो समीक्षक " भावयित्री प्रतिभा " से संपन्न है। एक में हृदय – पक्ष और दूसरे से बुद्धि – पक्ष को प्रधानता है। फिर भी " आलोचक पुरानी कृतियों को अंतर्विरोधों के साथ जब नये रूप पेश करता है तब वे आलोचक कंज्यूमर नहीं होता है बल्कि एक अर्थ में वो प्रोड्यूसर होता है , उत्पादक होता है। हमारा निष्कर्ष है कि आलोचना कविता , कहानी , उपन्यास इत्यादि की तरह पूर्ण रूप से सृजनात्मक नहीं है। पर वह एकदम सृजनात्मकता से मुक्त भी नहीं है।

निष्कर्ष

धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व की अनेक परतें होती हैं। एक ओर उनमें आर्यसमाजी संस्कारों का प्रभाव होता है तो दूसरी ओर अतरसुइया मुहल्ले के जीवन का। रोमांस और श्रृंगार – प्रियता उनके रक्त में ही लीन हैं। इसी से उनकी यथार्थपरक रचनाएँ भी रोमानियत से अनुप्राणित हैं। डॉ . प्रभाकर श्रोत्रिय ने लिखा है कि " उनके व्यक्तित्व का केन्द्रीय तत्व बौद्धिकता नहीं रागवेष्टिल सौन्दर्य है , जिसे उन्होंने पहचाना और बौद्धिकता से आक्रांत युग में साहसपूर्वक स्वीकारा भी। परन्तु वे जिस युग – परिवेश में ये ,उसकी कुछ दूसरी अपेक्षाएँ भी थीं , जिनकी उपक्षा उन जैसा सजग रचनाकार नहीं कर सकता था। " भारती साहित्य को राजनैतिक तत्वों और वादों से मुक्त करने के पक्ष में हैं। वे साहित्यकार को स्वतंत्रता और मानवमूल्यों की महत्ता पर बल दते हैं। विभिन्न संस्थाओं और प्रतिष्ठानों से संबद्ध भारती व्यवहार कुशल ,स्वस्थ चिंतक एवं दक्ष प्रशासक भी हैं। कई राज्य सरकारों , साहित्य अकादमियों और स्वतंत्र साहित्य प्रतिष्ठानों ने अनेक पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया हैं। भारत सरकार ने उन्हें 1972 में " पद्मश्री " पुरस्कार से सम्मानित किया है।

संदभ

1. राय विवेकी, हिन्दी कहानी समीक्षा और संदर्भ, पृ.सं. 60
2. जैन सविता, हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का अनुशीलन, पृ. सं. 4
3. बांदिवडेकर चंद्रकांत, धर्मवीर भारती ग्रंथावली खंड दो, पृ.सं. 178
4. राजपाल हुकुमचंद, धर्मवीर भारती साहित्य के विविध आयाम, पृ. सं. 58
5. सिंह विजयपाल, भारतीय काव्यशास्त्र, पृ.सं. 159
6. लवानिया रमेशचंद्र, हिंदी कहानी में जीवन–मूल्य, पृ.सं. 236
7. लवानिया रमेशचंद्र, हिंदी कहानी में जीवन–मूल्य, पृ.सं. 236
8. धर्मवीर भारती व्यक्ति और दृ डॉ . पुष्पा वास्कर साहित्यकार आलका प्रकाशन , किदवई नगर , कानपुर – 11 प्रथम संस्करण 1987.
9. धर्मवीर भारती उपन्यास दृ कैलाश जोशी साहित्य चिन्मय प्रकाशन , चौड़ा रास्ता , जयपुर – 3 नवीन संस्करण 1976–1977.
10. धर्मवीर भारती साहित्य के दृ डॉ . हुकुमचन्द राजपाल विविध आयाम वि . भू . प्रकाशन , साहिबाबाद – 201005 संस्करण 1986.

11. धर्मवीर भारती और कमलेश्वर – प्रो . कृष्ण नारायण वशिष्ट कमलेश की कहानियों का तुलनात्मक – अध्ययन प्रथम संस्करण , 1981. बुक – सैण्टर , दलपत स्ट्रीट , मथुर – 1

12. धर्मवीर भारती का साहित्य डॉ . चन्द्रभानु सीताराम सोनवणे सृजन के विविध रंग पंचशील प्रकाशन , फिल्म कालोनी , जयपुर – 3 प्रथम संस्करण 1979.

13. नया सृजन नया बोध डॉ . कृष्णदत्त पालीवाल राजेश प्रकाशन , कृष्ण नगर , दिल्ली प्रथम संस्करण 1974.

14. नयी कविता नये कवि विश्वंभर मानव लोक भारती प्रकाशन , महात्मा गाँधी मार्ग , इलाहाबाद – 1, द्वितीय संस्करण 1968.

15. नयी कविता कथ्य एवं विमर्श – डॉ . अरूण कुमार चित्रलेखा प्रकाशन , अलोपी बाग , इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1988.

16. नयी कविता आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी दि मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड , नयी दिल्ली , प्रथम संस्करण 1976.

17. नयी कविता विलायती संदर्भ जगदीश कुमार सन्मार्ग प्रकाशन , दिल्ली – 7 प्रथम संस्करण 1976.

18. अरोड़ा, प्रियंका. (2021) एक अंत या एक नई शुरुआतरू धर्मवीर भारती के अंधा युग में रूपक को समझना। 2456–2696.

19. अरोड़ा, प्रियंका. (2021)। एक अंत या एक नई शुरुआतरू धर्मवीर भारती के अंधा युग में रूपक को समझना। 2456–2696.